ललक

'आनन्दमय जन्मदिवस' के लिए
गुरुमाई चिद्विलासानन्द द्वारा चुना गया एक सद्गुण

सिद्धयोग ध्यान शिक्षक मैत्रेय लॅरिओस द्वारा लिखित व्याख्या

श्रीगुरुमाई हमें जिन दिव्य सद्गुणों का विकास करने के लिए प्रोत्साहित करती हैं, उनके बारे में एक ख़ास बात यह है कि ये सद्गुण हमारे अन्दर पहले से ही विद्यमान हैं। उदाहरण के लिए, ललक के सद्गुण को ही ले लीजिए। इस ग्रह पर हर किसी में, चिरस्थायी सुख और सच्चा सम्बन्ध पाने की ललक है, और हमारा हर एक निर्णय, हर एक कार्य इसी पर आधारित होता है। यह ललक प्रायः हमारी सभी प्रकार की इच्छाओं में व्यक्त होती है, इस विश्वास के साथ कि बाहरी परिस्थितियाँ और धन-सम्पत्ति से हमें खुशी मिलेगी : नई गाड़ी, और अधिक प्रेम करने वाला साथी, ऊँचे-ऊँचे पद, या और अधिक मनोरम स्थानों की सैर। परन्तु, सच तो यह है कि ऐसे लक्ष्य थोड़े दिन के होते हैं और हमें असली खुशी देने के बजाए, एक बार पूरे हो गए तो इनके स्थान पर नई इच्छाएँ जागने लगती हैं। इस चक्र में, हमारी तृष्णा कभी पूरी तरह तृप्त नहीं होती; हम अपनी सच्ची ललक को जान ही नहीं पाते और वह अधूरी ही रह जाती है।

श्रीगुरुमाई ललक की व्याख्या इन शब्दों से करती हैं :

> यह ललक है : अन्तर में उस प्रकाश को देखने की चाह, अन्तर-अनुभव की चाह, भगवान के दर्शन की चाह, सत्य को महसूस करने की चाह।[१]

गुरुमाई जी हमें सिखाती हैं कि ललक का जो गहनतम रूप है, वह है, अपने अन्तर में निहित सत्य को जानने की इच्छा। 'ललक' या 'लालसा' के लिए संस्कृत में कई शब्द हैं। परम्परागत तौर पर, मोक्ष की प्रबल इच्छा या उत्कण्ठा को कहा जाता है, 'मुमुक्षुत्व' या 'मोक्ष अर्थात् परम मुक्ति के लिए तीव्र इच्छा की स्थिति'। यह संस्कृत संज्ञा, मूल क्रियापद, 'मुक्' से बनी है जिसका अर्थ है, 'छोड़ देना', 'स्वतन्त्र करना', 'मुक्त करना'। किससे मुक्त करना? महान भारतीय ऋषि आदि श्रीशंकराचार्य अपने ग्रन्थ, 'विवेकचूडामणि' में, मुमुक्षुत्व पर अपनी परिभाषा द्वारा इस बात की ओर संकेत करते हुए कहते हैं :

> अहंकारादिदेहान्तान् बन्धानज्ञानकल्पितान्।
> स्वस्वरूपावबोधेन मोक्तुमिच्छा मुमुक्षुता॥

> स्वस्वरूप का बोध प्राप्त करके स्वयं को समस्त बन्धनों से मुक्त करने की इच्छा, मुमुक्षुत्व है। अहंकार से लेकर भौतिक देह तक को बाँधने वाले ये बन्धन, अज्ञान के प्रति [मनुष्य की] आसक्ति के परिणामस्वरूप होते हैं।[२]

"स्वयं को समस्त बन्धनों से मुक्त करना"—इन शब्दों से श्रीशंकराचार्य जी का अभिप्राय यह नहीं है कि हमें अपने शरीर या मन, अथवा अपने पदों या सांसारिक उद्यमों को त्याग देना है, बल्कि उनका अभिप्राय यह है कि ये सब चीज़ें हमारे जीव-भाव या सीमित व्यक्तित्व के पहलू हैं और इनके साथ जुड़ी अपनी भ्रमपूर्ण पहचान से हमें अपने आप को मुक्त करना है। अतः, अपने सच्चे स्वरूप के अज्ञान से छुटकारा पाना, मोक्ष है। यह वह स्थिति है जिसमें हम अपनी सच्ची आत्मा के स्वातन्त्र्य और आनन्द के बोध को पूरी तरह से पुनः पा लेते हैं। और ललक उस पोषण की तरह है जिसकी आवश्यकता हमें इसलिए है ताकि हम अपने अन्तर्जात स्वातन्त्र्य के अनुभव की इस यात्रा में विकास और प्रगति कर सकें।

महान ऋषिजन हमें बताते हैं कि एक बार जब हम अपने बोध को अन्तर की ओर मोड़ देते हैं और अपने सुख के स्रोत का पता लगा लेते हैं तो हमें ज्ञात हो जाता है कि जिसे हम खोज रहे हैं, वह असल में हमारे ही अन्दर विद्यमान है।

ललक के लिए अभिकथन

मुझे इस बात का अभिज्ञान है कि
भगवान को जानने की इच्छा ही मेरी ललक का सार है।

[अभिज्ञान होना अर्थात् पहचानना, बोध होना, जान लेना, ज्ञात हो जाना]

[अभिकथन—वे कथन जिन्हें जागरूकता के साथ बार-बार दोहराया जाता है ताकि वे हमारी चेतना में पैठ जाएँ।]

[१] गुरुमाई चिद्विलासानन्द, *Kindle My Heart* [साउथ फ़ॉल्सबर्ग, न्यूयॉर्क, एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन, १९९६] पृ. २०४.

[२] विवेकचूडामणि, २७; अंग्रेज़ी भाषान्तर ©एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन २०१६।

©२०२० एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।